सारांशिका

हिन्दी साहित्य में कथा–साहित्य एक अनंत संभावनाओं को तलाशने वाली विधा है। इसमें आए दिन नवीन–नवीन शोध कार्य एवं रचनाएं होती रहती हैं। इस विधा में ही रचनाकार अपनी विलक्षण प्रतिभा को बखूबी सुन्दर ढंग से निखार पाता है। वह अपने मन–मस्तिष्क के सभी सकारात्मक एवं नकारात्मक पक्षों को भी अपनी कथा–साहित्य में स्थान देने का प्रयास कर पाता है। कथा–साहित्य की विषयवस्तु एवं उसके निष्कर्ष अनेक नवीन प्रसंगों से भरे होते हैं। इसमें लेखक के बहुआयामी दृष्टिकोण एवं उसके प्रत्युत्पन्नमति जैसी सृजनात्मकता भी देखने को मिलती है। वर्तमान समय में कथा साहित्य में अनेक नवीन प्रकार के विषयवस्तु को स्थान दिया जा रहा है, उस पर विमर्श हो रहे हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि कथा–साहित्य जैसी विधा में प्रतिदिन नवीन मुद्दे उठ रहे हैं और उन्हें साहित्य में सराहा भी जा रहा है।

मेरा शोध–प्रबन्ध भी कथा–साहित्य पर ही आधारित है। मेरे शोध का शीर्षक है–''समाजशास्त्रीय निकष पर कमल कुमार के कथा–साहित्य का अनुशीलन।'' समकालीन कथा–साहित्य के क्षेत्र में कमल कुमार एक चर्चित हस्ताक्षर हैं। कमल कुमार सिर्फ एक उपन्यासकार और कहानीकार ही नहीं हैं अपितु वह एक सफल कवयित्री एवं आलोचक भी हैं। उनको बचपन से ही कविताएँ लिखने का शौक था। कमल कुमार ने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज की बदलते विभिन्न स्वरूपों का वर्णन किया है। इनकी पहली कहानी 'तीन देवियाँ' शीर्षक से प्रकाशित हुयी थी। इस कहानी की सफलता के बाद उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा। वह निरन्तर अपनी रचना–प्रक्रिया में अग्रसर रहीं। इन्होंने हिन्दी साहित्य के भण्डार को अपनी रचनाओं से गर्वित एवं समृद्ध बनाया है। इन्होंने अपने कथा–साहित्य के माध्यम से जहाँ एक ओर समाज के विभिन्न स्वरूपों यथा–सामाजिक स्वरूप, सांस्कृतिक स्वरूप, धार्मिक स्वरूप, आर्थिक स्वरूप एवं राजनीतिक स्वरूप आदि के बड़े ही सूक्ष्म रूप में वर्णन किया है, वहीं पर एक ओर निरन्तर रीतती जा रही मानवीय संवेदना को रेखांकित करते हुए लगभग निम्नवर्ग के पात्रों को उनकी जिन्दगी के समूचे दायरे में घूसकर अध्ययन करती नजर आती हैं। नये जमाने की रफ्तार से फंसी जिन्दगी के मजबूरियों के तहत अप–संस्कृति के गर्त में धंसते जा रहे आधुनिक मानवीय मूल्यों को स्तब्ध कर देने वाली तस्वीर भी गहरी संवेदना से उकेरती हैं।

यही कारण है कि मैंने अपने शोध कार्य के लिए कमल कुमार के कथा–साहित्य को चुना। मेरे शोध का शीर्षक है–''समाजशास्त्रीय निकष पर कमल कुमार के कथा–साहित्य का अनुशीलन।'' इस शोध प्रबंध को पूर्ण करने के लिए जो उद्देश्य निर्धारित किये गये वे निम्न हैं–

1. साहित्य का समाजशास्त्र क्या है और साहित्य में इसकी क्या उपयोगिता या महत्ता है इस तथ्य का अन्वेषण करना।

2. कमल कुमार के समूचे जीवन–परिचय का अन्वेषण करना।
3. समकालीन कथा–साहित्य के परिप्रेक्ष्य में कमल कुमार की रचनाओं का मूल्यांकन करना।
4. समाजशास्त्रीय निकष पर कमल कुमार के उपन्यासों का मूल्यांकन करना।
5. समाजशास्त्रीय निकष पर कमल कुमार की कहानियों का मूल्यांकन करना।
6. भाषा वैशिष्ट्य की दृष्टि से कमल कुमार की रचनाओं का मूल्यांकन करना।

शोध लेखन के दौरान मैंने इन सभी लक्ष्यों की प्राप्ति की कोशिश की है।

प्रस्तुत शोध कार्य को कुल पाँच अध्यायों में विभाजित किया गया है जो निम्न प्रकार से हैं–

1 साहित्य का समाजशास्त्र : स्वरूप विश्लेषण – समाजशास्त्र क्या है? इसकी परिभाषा विद्वानों ने क्या दी है? समाजशास्त्र का साहित्य में क्या औचित्य है? इन सभी विषयों की गहराई से जाँच–पड़ताल करके उन्हें व्याख्यायित और विश्लेषित करने का प्रयास इस अध्याय में किया गया है।

समाजशास्त्र एक ऐसा विषय है जिसमें समाज के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन किया जाता है। इसमें समाज के प्रत्येक गतिविधि, व्यवहार, संरचना आदि को शामिल किया जाता है। समाजशास्त्र अन्य विषयों जैसे–राजनीतिशास्त्र, मनोविज्ञान, अर्थशास्त्र आदि की तरह ही सामाजिक विज्ञान है। साथ ही यह विषय तथ्यात्मक और कार्यात्मक रूप से परिपक्व और स्वतंत्र है। समाजशास्त्र समाज का विज्ञान भी माना जाता है। समाजशास्त्र को विद्वानों ने भिन्न–भिन्न प्रकार से परिभाषित किया है। जिस तरह के नजरिये और दृष्टिकोण से विद्वानों ने समाजशास्त्र को देखा, परखा, जाना है, उसी के अनुरूप समाजशास्त्र को परिभाषित भी किया है। कुछ विद्वान समाजशास्त्र को सामाजिक सम्बन्धों का अध्ययन मानते हैं तो कुछ विद्वान समाज का अध्ययन मानते हैं। कुछ समाजशास्त्रियों ने समाजशास्त्र को सामाजिक जीवन, घटनाओं, व्यवहार एवं कार्यों से जोड़कर परिभाषित किया है।

आज विश्वभर में समाजशास्त्र स्वतंत्र रूप से अपनी पहचान बनाने में सफल रहा है।

2. मेरे शोध का द्वितीय अध्याय है – ''कमल कुमार और उनका साहित्य : संक्षिप्त परिचय संदर्भ उपर्युक्त अध्याय को मैंने पुनः कई उप–अध्यायों में विभाजित किया है। जिसके अन्तर्गत कमल कुमार का जन्म, उनके माता–पिता, शिक्षा, साहित्य सृजन की प्रेरणा, कमल कुमार का हिन्दी साहित्य में योगदान तथा उनकी समग्र रचनाओं का संक्षिप्त परिचय देने का प्रयास किया है जिससे उनके सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विषय में जाना जा सके।

3. समाजशास्त्रीय निकष पर कमल कुमार के उपन्यास इस अध्याय को मैंने पुनः कई उप–अध्यायों में विभाजित किया है जिसके अन्तर्गत उनके उपन्यासों में समाहित विभिन्न वर्गों तथा उनकी पारिवारिक समस्याएँ, धार्मिक समस्याएँ, आर्थिक समस्याएँ, राजनीतिक समस्याएँ आदि पर प्रकाश डाला गया है। ये सभी समस्याएँ प्रत्येक मनुष्य के जीवन में आती हैं तथा उनको प्रभावित करती हैं इसलिए उनका समाजशास्त्रीय अध्ययन महत्त्वपूर्ण हो जाता है।

4. ''समाजशास्त्रीय निकष पर कमल कुमार की कहानियाँ'' इस अध्याय को मैंने पुनः कई उप–अध्यायों में वर्गीकृत किया है। इसके अन्तर्गत मैंने प्रत्येक मनुष्य के जीवन में घटित होने वाली अनेक समस्याओं जैसे–पारिवारिक समस्याएँ, धार्मिक समस्याएँ, आर्थिक समस्याएँ, राजनीतिक समस्याएँ आदि का अन्वेषण करने का प्रयास किया है। सभी उप–अध्यायों के माध्यम से व्यक्ति जीवन के सभी पक्षों की समस्याओं का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है।

5. ''कमल कुमार के कथा–साहित्य का भाषा वैशिष्ट्य'' इस अध्याय को मैंने पुनः कई उप–अध्यायों में वर्गीकृत किया है। इसके अन्तर्गत लेखिका द्वारा उनकी रचनाओं में प्रयुक्त होने वाली रोजमर्रा की शब्दावली, उनकी सरल एवं सहज भाषा, पात्रों द्वारा प्रयोग किये गये स्वगत कथन मुहावरों एवं लोकोक्तियों का प्रयोग एवं लोकगीतों का प्रयोग आदि पर विस्तृत जानकारी देने का प्रयास किया गया है।

इस प्रकार शोध लेखन के द्वारा मानव जीवन के सभी पक्षों पर पड़ने वाले प्रभाव को समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से देखने का प्रयास किया गया है। प्रत्येक मनुष्य समाज में रहता है और उन सभी मनुष्यों की कोई न कोई सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, पारिवारिक एवं राजनीतिक पृष्ठभूमि अवश्य रहती है। कमल कुमार का कथा–साहित्य इसी पृष्ठभूमि में आने वाली समस्याओं एवं उनके समाधानों की पड़ताल करता है जोकि मेरे शोध का मुख्य आधार रहा है। कमल कुमार ने अपने कथा–साहित्य के माध्यम से ऐसे सभी वर्गों को समाज के केन्द्र में लाने एवं उनको सभी मानवाधिकारों के प्रति सचेत करने का प्रयास किया है जिनको प्रायः समाज में हाशिए पर धकेल दिया जाता है।

साहित्य का सर्वेक्षण

मैंने अपने शोध कार्य को सुचारू एवं सफलतापूर्वक गतिशील बनाए रखने के लिए मैंने कमल कुमार के सभी रचनाओं को आधार ग्रंथ बनाया एवं विभिन्न लेखकों के पुस्तको को सन्दर्भ ग्रंथ के रूप में प्रयोग किया है। मैंने विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं एवं इन्टरनेट का सहारा लिया। देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों में जाकर अपने शोध से सम्बन्धित तथ्यों को एकत्रित किया एवं लेखिका से ई–मेल के जरिये उनके विषय में जानकारी एकत्रित की।

उपर्युक्त सभी प्रक्रियाओं का अध्ययन करते हुए मैंने अपने शोध के उद्देश्य को प्राप्त करने का प्रयास किया है।

इन सभी अध्यायों के अध्ययन के उपरांत हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं, कि कमल कुमार की रचनाओं में समाज के प्रत्येक पहलुओं और गतिविधियों को बखूबी देखा समझा जा सकता है। कमल कुमार की रचनाओं में सामाजिक विषमताएँ जो पुरुष और स्त्री के वर्चस्व को अलग–अलग करती प्रतीत होती हैं। उन पर प्रश्न चिन्ह खड़ा किया है। स्त्री को पुरुष के बराबर ही रखा है। उनको भी अपनी इच्छा और बातों को रखने का पूरा अधिकार है। पुरुषों के द्वारा अपने फैसले सुनने और उनको मानने के लिए बाध्य करना बिल्कुल गलत है। उनकी रचनाओं में सत्ता की भूख के कारण पारिवारिक विघटन और मूल्यों का ह्रास कैसे होता है, उसको